शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

शोध प्रबंधों की प्रासंगिकता का सवाल

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अध्यापन करने के लिए शोधार्थी के लिए विद्यावाचस्पति की उपाधि धारण करना अनिवार्य है। यद्यपि अनेक प्रकार के लेकिन, किंतु, परंतु के साथ इस अनिवार्यता को शिथिल किया गया है। शोध करने के इच्छुक शोधार्थियों के लिए उच्च शिक्षा अनुदान आयोग की कनिष्ठ अध्येता वृत्ति, राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा और पीएचडी परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। एक ही परीक्षा से शोधार्थी तीनों लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। इसके पूर्व स्नातकोत्तर उपाधि में 55 प्रतिशत अंक हासिल करने के बाद विश्वविद्यालय की डीईटी परीक्षा में 50 प्रतिशत अंक लाकर शोध के लिए पंजीकरण हो जाता था। शोधार्थी के सामने शोध की प्रासंगिकता का प्रश्न हमेशा से उपस्थित रहा है। यह प्रश्न तब और गहरा हो जाता है जब अध्यापन कार्य में रोजगार के अवसर सीमित हो चले हों। समाज प्रवाह के चलते शोधार्थी विश्वविद्यालय में पीएचडी के लिए पंजीकृत हो रहे हैं, परंतु साथ में आत्मविश्वास की कमी से भी जूझ रहे हैं। कला विषय में हिन्दी साहित्य के शोधार्थियों में यह प्रवृत्ति अधिक परिलक्षित हो रही है। आज विज्ञान युग में हिन्दी साहित्य कहीं बहुत पीछे छूट गया है। इंटरनेट पर शोध संबंधी जानकारियों का अंबार लगा हुआ है। एक शब्द से भी शोध विषय और क्षेत्र को खोजा जा सकता है, परंतु अध्ययन की कमी के चलते हिन्दी के शोधार्थी इसका उपयोग करने में असमर्थ हैं। इसका मुख्य कारण हिन्दी के शोधार्थी आज भी तकनीक की जानकारी के मामले में पीछे हैं। अनेक बार यह शिकायत की जाती है कि हिन्दी के शोधार्थी घिसे-पिटे पुराने विषयों पर शोध कर रहे हैं। यह शिकायत वाजिब है, परंतु क्या इसके लिए शोध निर्देशक जिम्मेदार नहीं हैं, जिनमें शोध दृष्टि का सर्वथा अभाव है। यह बात सत्य है कि साहित्य के शोध को विज्ञान अथवा समाजशास्त्र के शोध के समान यांत्रिक अथवा समाज के लिए तत्काल उपादेय नहीं बनाया जा सकता। यांत्रिक युग में अनुभूतियों और संवेदनाओं के निरंतर ह्रास के चलते हिन्दी में शोध कार्य यांत्रिक होकर रह गया है, इसलिए उसकी प्रासंगिकता पर प्रश्न उपस्थित हो रहे हैं। शोध निर्देशकों और शोधार्थियों को अपने में शोधपरक दृष्टि विकसित करके इस प्रश्न का शमन किया जा सकता है। शोध एक गंभीर, चिंतनपरक कार्य है। इसे सिर्फ आजीविका से न जोड़कर साधना के स्तर तक ले जाएंगे, तब हिन्दी में होने वाले शोध कार्य समाजोपयोगी होकर दिशा देने में समर्थ होंगे।